इकाई 2 वास्तुशास्त्र के प्रमुख आचार्य

इकाई की संरचना

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 वास्तुशास्त्र के आचार्य

2.3 वास्तुशास्त्र के आचार्यों का परिचय

2.4 सारांश

2.5 शब्दावली

2.6 अभ्यास प्रश्न की उत्तरमाला

2.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.0 उद्देश्य

वास्तुशास्त्र के आचार्य नामक इस इकाई के अध्ययन से आप समझ पायेंगे कि -

- वास्तुशास्त्र के प्रवर्तक आचार्यों के अनन्तर वास्तु परम्परा किस प्रकार विकसित हुयी।
- वास्तुशास्त्र का प्रायोगिक पक्ष किस प्रकार मानव कल्याण के लिये प्रचारित-प्रसारित हुआ।
- वास्तुशास्त्र की आचार्य परम्परा किस प्रकार नागर एवं द्राविण शैली में विकसित हुयी।
- द्राविण तथा नागर परम्परा के प्रवर्तक आचार्य कौन-कौन हैं।
- वास्तुशास्त्र के आचार्यो के व्यक्तित्व व कृतित्व का विस्तृत परिचय।
- वास्तुशास्त्र के आचार्यों द्वारा स्थापित नियम आदि का विस्तृत ज्ञान।
- वास्तुशास्त्र की गौरवशाली आचार्य परम्परा को जानकर वास्तुशास्त्र के अध्ययन में रुचि जागृत होगी।

2.1 प्रस्तावना

सम्पूर्ण विश्व में भारतीय वास्तुशास्त्र के प्रचार प्रसार का सबसे बड़ा कारण यह भी है कि भारतीय वास्तु शास्त्र का आधार ही मनुष्य को मानसिक दृष्टि से सुख प्रदान करना है। क्योंकि भारतीय वास्तु शास्त्र केवल मनुष्य के शारीरिक सुख का ही नहीं अपितु मानसिक सुख का भी विचार करता है। भारतीय वास्तुशास्त्र केवल ऐसे भवन की कल्पना नहीं करता जिस में रहकर मानव को केवल भौतिक सुख ही मिले अपितु ऐसे भवन की भी कल्पना करता है, जिसमें मनुष्य प्रसन्न चित्त रहें और उसका जीवन समृद्धि और सुखमय हो और भवन में रहने वाले सभी लोगों में पारस्परिक सौहार्द और सामंजस्य की भावना हो। यही भारतीय वास्तुशास्त्र का मूल उद्देश्य है, और इसी मूल उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भारत के ऋषियों ने आचार्यों ने वास्तु

शास्त्र के विविध ग्रन्थों का निर्माण किया।

भारतीय वास्तुशास्त्र विश्व में एक अनमोल धरोहर है, सम्पूर्ण विश्व में भारत ही एक ऐसा राष्ट्र है जहां पर वास्तु जैसी आवश्यकता के लिए प्रमाण सिद्धान्तों को विस्तार से लिखित रूप दिया गया है। ऐसा ज्ञान विश्व के अन्य किसी भी देश के पास नहीं है, यह मानव के उस उन्नत ज्ञान का आधार है जिसमें उसके सुखमय जीवन यापन की लालसा के साथ ही सुख आवास की भावना नीहित है। सामान्यतया तो जानवरों-पशु-पक्षियों तक ने अपने लिए उचित आवासों का निर्माण किया और भटकाव को विराम देने का प्रयत्न किया है, तब मानव भला क्यों ऐसा नहीं करें।

कृषि के विकास के साथ ही मानवीय जीवन में एक अद्भुत ठहराव आया और उसने आवास की दिशा में अपना ध्यान आकर्षित किया भारतीय उपमहाद्वीप में हड़प्पा आदि के उत्खनन बतलाते हैं कि मानव ने आवास नगर आदि से अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाने का भी प्रयास किया और प्रथम तथा पंचतत्वों को महत्व देते हुए आवासीय सुविधाओं का विकास किया। इस प्रकार के कुछ नगर कुछ वर्षों पहले अरब सागर में भी खोजे गए हैं, निश्चय ही मानव ने अपने आवास के लिए बहुत गहन विचार किया और यथा आवश्यक आवासों को आकार दिया। यह आवास गृह से लेकर देवप्रासाद आदि भी रहे हैं।

वास्तुशास्त्र के आचार्यों ने एकमत से माना है कि स्त्री पुत्र आदि के भोग, सुख, धर्म, अर्थ, काम को देने वाला प्राणियों के सुख का स्थान और शीत, वायु, गर्मी, वर्षा, सर्दियों से रक्षा सुरक्षा करने वाला आवास ही होता है।

स्त्रीपुत्रादिकभोग्यसौख्यजननं धर्मार्थकामप्रदम्।
जन्तूनामयनं सुखास्पदमिदं शीताम्बुधर्मापहम्।

वापीदेवगृहादिपुण्यमखिलं गेहात्समुत्पाद्यते।
गेहं पूर्वमुशन्ति तेन बिबुधाः श्रीविश्वकर्मादयः॥

इस प्रकार विधि पूर्वक गृह निर्माण कर्ता को बावड़ी देवालय आदि के निर्माण का पुण्य भी प्राप्त होता है। इसीलिए विश्वकर्मा आदि ने सर्वप्रथम गृह निर्माण का आदेश प्रदान किया है। आचार्यों ने तो यह भी कहा है कि पर्णशाला से उर के निर्माण से कोटि गुना, मिट्टी के गृह निर्माण से 10 गुना, इष्टिका के गृह से सौ गुना और पहाड़ों का गृह बनाने से अनंत गुना पुण्य की प्राप्ति होती है। इसका सामान्य भाव यह है कि व्यक्ति को अपने लिए शास्त्र सम्मत सुदृढ़ आवास का निर्माण आवश्यक रूप से करना चाहिए यह आवास चिरस्थाई और सुखद होता है। इसी मान्यताओं को लेकर प्रत्येक काल में आवासों की सुंदरता सुंदरता और स्थायित्व के लिए विविध प्रयास किए जाते रहे तथा इन प्रयासों ने वास्तु विज्ञान को विकास की विधि से वैभव के विस्तृत भी उनकी ओर अग्रसर किया विविध लोकेशन के लिए यही विचार आधार बना होगा। भारतीय वास्तुशास्त्र समग्र निर्माण (भवन आदि का) विधि एवं प्रक्रिया प्रतिपादक शास्त्र है। इस शास्त्र की उत्पत्ति स्थापत्यवेद से हुई है, जो अथर्ववेद के उपवेद के रूप में प्रसिद्ध है। यह स्थापत्य विज्ञान है, जो प्रकृति के पाँच मूलभूत तत्त्वों (पृथिवी, जल, तेज, वायु एवं आकाश) का संयोजन करती है तथा उनका मनुष्य एवं पदार्थों के साथ सामञ्जस्य स्थापित करती है। यह वास्तु सम्मत भवनों में रहने वाले प्राणियों के स्वास्थ्य, धन-धान्य, प्रसन्नता एवं समृद्धि के लिए कार्य करती है। ऋग्वेद की एक ऋचा में वैदिक-ऋषि वास्तोष्पति से अपने

संरक्षण में रखने तथा समृद्धि से रहने का आशीर्वाद प्रदान करने हेतु प्रार्थना करता है। ऋषि अपने द्विपदों (मनुष्यों) तथा चतुष्पदों (पशुओं) के लिए भी वास्तोष्पति से कल्याणकारी आशीर्वाद की कामना करता है। जैसा कि ऋग्वेद में (7/54/1) ऋषि उद्घोष करते हैं -

वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः ।
यत् त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ।।

ज्योतिष शास्त्र के संहिता भाग में सर्वाधिक रूप से वास्तुविद्या का वर्णन उपलब्ध होता है । ज्योतिष के विचारणीय पक्ष दिग्-देश-काल के कारण ही वास्तु ज्योतिष के संहिता भाग में समाहित हुआ । वैदिक काल से ही ज्योतिष शास्त्र मानव जीवन के विविध पक्षों का सूक्ष्मातिसूक्ष्म विचार करता आ रहा है । हजारो-हजारों वर्षों से हमारे आचार्य इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। मत्स्य पुराण के अनुसार भृगु, अत्रि, वसिष्ठ आदि ऋषियों ने वास्तुशास्त्र की विस्तृत व्याख्या करके उच्च कीर्तिमान स्थापित किये हैं । इनमें विश्वकर्मा एवं मय वास्तुशास्त्र के सुविख्यात आचार्य रहे हैं । ये दोनों वास्तुशास्त्र के समकालीन प्रतिद्वन्द्वी माने जाते हैं । विश्वकर्मा एवं मय के अनुयायियों ने भवननिर्माण के अनेकों नियमों की व्याख्या वास्तुशास्त्र के मानक ग्रन्थों में की है। इन ग्रन्थों में वास्तुशास्त्र के उद्देश्यों एवं आवश्यकता पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है ।

वास्तु शास्त्र के कालखंड को देखें तो पूर्व मध्यकाल तक तो राज प्रसाद के निर्माण के विभिन्न नियम तय भी हो गए, तथा दरबारियों के साथ ही सेवकों, भृत्तों,, जनसामान्य के लिए यथा भवन आदि के निर्माण तथा स्थान आदि के चयन के निर्देश दिए जाने लगे थे। मयमतम, मानसार, विश्वकर्मा शिल्पशास्त्र, मनुष्यालय लक्षण, जयपृच्छा, मनुष्यालय सोपान, नारद शिल्प, कश्यप शिल्प, वास्तु तंत्र, विश्वकर्मा प्रकाश, अपराजित पृच्छा, समरांगण सूत्रधार, प्रयोग मंजरी आदि सौ से अधिक ग्रन्थों में इस प्रकार के विविध विचारों को प्रतिपादित किया गया है । इस इकाई में आप सभी वास्तु शास्त्र के आचार्यों के विषय में विस्तार से जानेंगे और आचार्यों के अनुभव प्रमाण संदेश को लेकर उनका विस्तृत परिचय भी प्रदान किया जाएगा । वास्तुशास्त्र के आचार्यों में उन आचार्यों की गणना की जाती है, जिन आचार्यों की चर्चा विविध पुराणों तथा विविध ग्रन्थों में प्राप्त नहीं होती, परन्तु प्राचीन परंपरा में इन आचार्यों के वास्तुशास्त्र पर स्वतन्त्र मौलिक ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। पिछले इकाई में आप ने वास्तुशास्त्र के प्रवर्तक आचार्यो के विषय में आपने पढ़ा और समझा कि प्रवर्तक आचार्यो के ग्रन्थ लुप्त प्राय हो चुके हैं:, परन्तु वास्तु परम्परा के संरक्षण और संवर्धन के लिए जिन आचार्यो ने अपनी तपस्या से वास्तुशास्त्र के अध्येताओ को उपकृत किया उनको इस इकाई के अंतर्गत "वास्तुशास्त्र के आचार्य" के नाम से जानेंगे । वास्तुशास्त्र दो परम्पराओं के रूप में विकसित हुआ।

1. विश्वकर्मा परम्परा
2. मय परम्परा ।

विश्वकर्मा नागर परम्परा के प्रवर्तकाचार्य तथा मय द्राविड परम्परा के जनक कहलाए। विश्वकर्मा देवशिल्पि और मयाचार्य दानवशिल्पि के रूप में विख्यात हुए। महाभारत में एक प्रसंग में आचार्य मय कहते हैं -

"अहं हि विश्वकर्मा दानवानां महाकाविः।।"

इन दोनों परम्पराओं में वास्तुशास्त्र के अनेक आचार्य हुये जिन्होने अपने तपस्या और ज्ञान से हमें शास्त्र का परिचय करवाया। इन ग्रन्थों में वर्णित सिद्धान्तों का अनुपालन अद्यावधि भवनों के निर्माण में किया जाता है। रामायण के अनुसार- "मय दिति के पुत्र थे, स्वर्ग की अप्सरा हेमा इनकी पत्नी थी और मन्दोदरी इनकी पुत्री थी। जिसका विवाह रावण से हुआ। इस प्रकार यह रावण के श्वसुर थे। मयाचार्य ने पाण्डवों के सभा भवन, पुष्पक विमानादि अनेक रचनायें की। इनका प्रमुख ग्रन्थ "मयमतम्' है। इसके अतिरिक्त मानसार, कश्यपशिल्प, मनुष्यालयचन्द्रिका, ईशानशिवगुरूदेव पद्धति आदि मय परम्परा के प्रमुख ग्रन्थ है। वराहमिहिर, भोजराज, सूत्रधारमण्डन आदि को वास्तुशास्त्र का आचार्य माना जाता है। इन आचार्यो ने वास्तुशास्त्र पर स्वतन्त्र ग्रन्थों की रचना की। इन ग्रन्थों में वास्तुशास्त्र के विविध सिद्धान्तों का विस्तार पूर्वक वर्णन प्राप्त होता है। वास्तुशास्त्र के आचार्य निम्नलिखित माने जा सकते है –

1. आचार्य वाराहमिहिर
2. आचार्य महाराजाधिराज भोजराज
3. आचार्य सूत्रधार मण्डन
4. आचार्य आचार्य भुवनदेव
5. आचार्य टोडरमल्ल
6. आचार्य रामदैवज्ञ
7. आचार्य मानसार
8. आचार्य जीवनाथ
9. आचार्य सूत्रधार गोविन्द
10. आचार्य वासुदेव द्विज
11. आचार्य नीलकण्ठन
12. आधुनिक या वर्तमान के आचार्य

2.2 वास्तुशास्त्र के आचार्य

वास्तुशास्त्र के आचार्य परंपरा में अनेक आचार्य हुये हैं जिनमें प्रथम नाम वराहमिहिर का है।

आचार्य वराहमिहिर

आचार्य वराहमिहिर का नाम ज्योतिष और वास्तु शास्त्र में सर्वोपरि माना जाता है। इन्होनें गणित एवं ज्योतिष का ज्ञान अपने पिता आदित्यदास से ही परम्परागत विधि के द्वारा प्राप्त किया था। आचार्य वराहमिहिर नें स्वयं अपने ग्रन्थरत्न वृहज्जातक में लिखा है -

आदित्यादासतनयस्तद्वाप्तबोधः काम्पित्थके सवित्रृलब्ध्वरप्रसादः।
आवन्तिको मुनिमतान्यवलोक्य सम्यक् होरावराहमिहिरो रुचिरां चकार।।

वराहमिहिर ही पहले आचार्य हैं जिन्होंने ज्योतिष शास्त्र को सिद्धान्त, संहिता तथा होरा के रूप में स्पष्ट रूप से व्याख्यायित किया। इन्होंने तीनों स्कंधों के निरूपण के लिए तीनों स्कंधों से संबद्ध अलग-अलग ग्रन्थों की रचना की। सिद्धान्त (गणित)- स्कंध में उनकी प्रसिद्ध रचना है- पंचसिद्धांतिका, संहितास्कंध में बृहत्संहिता तथा होरास्कंध में बृहज्जातक मुख्य रूप से

परिगणित हैं। इन्हें शकाब्द 427 में विद्यमान बताया जाता है। ये उज्जैन के रहने वाले थे इसीलिए ये अवन्तिकाचार्य भी कहलाते हैं। इनके पिता आदित्यदास थे, उनसे इन्होंने सम्पूर्ण ज्योतिर्ज्ञान प्राप्त किया। जैसे ग्रहों में सूर्य की स्थिति है, वैसे ही दैवज्ञों में वराहमिहिर का स्थान है। वे सूर्यस्वरूप हैं। उनकी रचना-शैली संक्षिप्तता, सरलता, स्पष्टता, गूढ़ार्थवक्तृता और पांडित्य आदि गुणों से परिपूर्ण है। इनका बृहज्जातक ग्रन्थ फलित शास्त्र का सर्वाधिक प्रौढ़ तथा प्रामाणिक ग्रन्थ है। इस पर भट्टोत्पली आदि अनेक महत्वपूर्ण टीकाएं हैं। आचार्य वराहमिहिर ने इस विज्ञान को अपनी प्रतिभा द्वारा बहुत विलक्षणता प्रदान की। ये भारतीय ज्योतिष शास्त्र के मार्तण्ड कहे जाते हैं।

यद्यपि आचार्य के समय तक (नारद संहिता आदि में) ज्योतिष शास्त्र संहिता, होरा तथा सिद्धान्त- इन तीन भागों में विभक्त हो चुका था तथापि आचार्य ने उन्हें और भी व्यवस्थित कर उसे वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया। ज्योतिष के सिद्धान्त स्कंध से संबद्ध इनके पंचसिद्धांतिका नामक ग्रन्थ की यह विशेषता है कि इसमें इन्होंने अपना कोई सिद्धान्त न देकर अपने समय तक के पूर्ववर्ती पांच आचार्यों (पितामह, वशिष्ठ, रोमश, पौलिश तथा सूर्य) के सिद्धान्तों (अभिमतों) का संकलन कर महत्वपूर्ण कार्य किया है। इनकी बृहत्संहिता-स्कंध का सबसे प्रौढ़ तथा मान्य ग्रन्थ है। इसमें 106 अध्याय हैं। इस पर भट्टोत्पल की टीका बड़ी प्रसिद्ध है।

फलित ज्योतिष का बृहज्जातक को दैवज्ञों का कंठहार ही है। इसमें 28 अध्याय हैं। इसमें स्वल्प में ही फलित ज्योतिष के सभी पक्षों का प्रामाणिक वर्णन है। इसमें पूर्व प्रचलित पाराशरीय विंशोतरी दशा को न मानकर नवीन दशा-निरूपण दिया हुआ है। इस ग्रन्थ का नष्टजातकाध्याय बड़े ही महत्व का है। भारतीय इतिहास में इनको गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है तथा इनके द्वारा निर्मित समय मापक घटयंत्र, वेधशाला, लौहस्तम्भ आदि का भी वर्णन प्राप्त होता है। महान खगोलज्ञ आर्यभट्ट से मिलने पर इन्हें ज्योतिष विद्या एवं खगोल ज्ञान में कार्य करने की प्रेरणा प्राप्त हुई। विक्रमादित्य ने इन्हें अपनी सभा के नवरत्नों में स्थान प्रदान किया। इन्होंने ज्योतिषशास्त्र के तीनों स्कन्ध (सिद्धान्त-संहिता-होरा) पर अपना अविस्मरणीय योगदान दिया है। वास्तुशास्त्र ज्योतिष का ही अङ्गरूप है इसमें कोई संदेह नहीं है। ज्योतिष के संहितास्कन्ध में वास्तु के विषय को यथावत् प्रस्तुत किया गया है। वराहमिहिर की बृहत्संहिता में भी वास्तुविद्या का स्पष्ट वर्णन प्राप्त होता है। इन्होंने न केवल भारत में अपितु सुदूर स्थित यूनान आदि देशों में भी भारतीय-ज्ञान-परम्परा का परचम लहराया है। इस प्रकार सन् 499-587 तक इनका जीवनकाल अनेक आविष्कारों के साथ आगे बढ़ा। इनके द्वारा रचित समस्त ग्रन्थों को आज भी ग्रन्थरत्न माना जाता है। वराहमिहिर द्वारा रचित ग्रन्थ निम्नलिखित है-

1. पञ्चसिद्धान्तिका
2. बृहज्जातक
3. लघुजातक
4. बृहद्संहिता
5. टिकनिकयात्रा
6. बृहद्यात्रा या महायात्रा
7. योगयात्रा या स्वल्पयात्रा
8. बृहद् विवाहपटल

9. लघुविवाहपटल
10. कुतूहल मंजरी
11. दैवज्ञवल्लभ
12. लग्नवाराही

आचार्य वराहमिहिर को वास्तुविषयक ज्ञान अत्यन्त विस्तार पूर्वक था। उन्होंने अपने संग्रह ग्रन्थ वृहद्संहिता में कश्यप, पराशर, देवल आदि पूर्व आचार्यों की संहिताओं का संग्रह कर नये नये विषयों को प्रतिपादित किया है।

आचार्य महाराजाधिराज भोजराज

महाराजाधिराजभोजराज भारत के महान शासकों में से एक थे। वह चतुर्मुखी प्रतिभासम्पन्न राजा माने जाते थे। इन्होंने सन् 1018-1060 तक सम्पूर्ण भारत में राज किया था। इनकी राजधानी धारा नगरी थी, इसी कारण से इन्हें धराधिप, धारेश्वर के नाम से भी जाना जाता है। इन्होंने अपनी राजधानी में सरस्वती मन्दिर एवं सरस्वती पाठशाला का भी निर्माण करवाया था भोजराज ने अनेक ग्रन्थों का प्रतिपादन किया और करवाया था। इन्होंने भोपाल के रम्य प्राकृतिक वातावरण में एक अत्यधिक सुन्दर 250-350 वर्गमील का एक अतिविशाल कृत्रिम तालाब का भी निर्माण करवाया था, जो वर्तमान में यथास्थिति में प्राप्त होता है।

अल्पायु में सिंहासनारोहण के समय महान राजा भोज चारों ओर से शत्रुओं से घिरे थे। उन्होंने सब को हराया। भोज नाम से और भी राजा हुए हैं जैसे मिहिर भोज। हम यहां बात कर रहे हैं उन राजा भोज की जिन्होंने अपनी राजधानी धार को बनाया था। उनका जन्म सन् 980 में महाराजा विक्रमादित्य की नगरी उज्जैनी में हुआ। राजा भोज चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य के वंशज थे। पन्द्रह वर्ष की छोटी आयु में उनका राज्य अभिषेक मालवा के राजसिंहासन पर हुआ। प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान डॉ. रेवा प्रसाद द्विवेदी ने प्राचीन संस्कृत साहित्य पर शोध के दौरान मलयाली भाषा में भोज की रचनाओं की खोज करने के बाद यह माना है कि राजा भोज का शासन सुदूर केरल के समुद्र तट तक था। ग्वालियर से मिले महान राजा भोज के स्तुति पत्र के अनुसार केदारनाथ मंदिर का राजा भोज ने 1076 से 1099 के बीच पुनर्निर्माण कराया था। राहुल सांकृत्यायन के अनुसार यह मंदिर 12-13वीं शताब्दी का है। इतिहासकार डॉ. शिव प्रसाद डबराल मानते हैं कि शैव लोग आदिशंकराचार्य से पहले से ही केदारनाथ जाते रहे हैं, तब भी यह मंदिर मौजूद था। कुछ इतिहासकारों अनुसार राजा भोज परमार मालवा के 'परमार' अथवा 'पवार वंश' के नौवें यशस्वी राजा थे। उन्होंने 1018 ईस्वी से 1060 ईस्वी तक शासन किया। कुछ विद्वानों अनुसार परमार वंश ने मालवा पर सन् 1000 से 1285 तक राज किया। भोजराज इसी महाप्रतापी वंश की पांचवीं पीढ़ी में थे। कुछ विद्वान मानते हैं कि महान राजा भोज (भोजदेव) का शासनकाल 1010 से 1053 तक रहा। राजा भोज ने अपने काल में कई मंदिर बनवाए। राजा भोज के नाम पर भोपाल के निकट भोजपुर बसा है। धार की भोजशाला का निर्माण भी उन्होंने कराया था। कहते हैं कि उन्होंने ही मध्यप्रदेश की वर्तमान राजधानी भोपाल को बसाया था जिसे पहले 'भोजपाल' कहा जाता था। इनके ही नाम पर भोज नाम से उपाधी देने का भी प्रचलन शुरू हुआ जो इनके ही जैसे महान कार्य करने वाले राजाओं की दी जाती थी। भारत के सांस्कृतिक गौरव के जो स्मारक हमारे पास हैं, उनमें से अधिकांश राजा भोज की देन हैं, चाहे विश्वप्रसिद्ध भोजपुर मंदिर हो या विश्वभर के शिवभक्तों के श्रद्धा के केंद्र उज्जैन स्थित

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

महाकालेश्वर मंदिर, धार की भोजशाला हो या भोपाल का विशाल तालाब- ये सभी राजा भोज के सृजनशील व्यक्तित्व की देन हैं। राजा भोज नदियों को जोड़ने के कार्य के लिए भी पहचाने जाते हैं। आज उनके द्वारा खोदी गई नहरें और जोड़ी गई नदियों के कारण ही नदियों के कंजर्व वाटर का लाभ आम लोगों को मिल रहा है। भोपाल शहर का बड़ा तालाब इसका उदाहरण है। भोज ने भोजपुर में एक विशाल सरोवर का निर्माण कराया था, जिसका क्षेत्रफल 250 वर्ग मील से भी अधिक विस्तृत था। यह सरोवर पन्द्रहवीं शताब्दी तक विद्यमान था, जब उसके तटबन्धों को कुछ स्थानीय शासकों ने काट दिया। उन्होंने जहां भोज नगरी (वर्तमान भोपाल) की स्थापना की वहीं धार, उज्जैन और विदिशा जैसी प्रसिद्ध नगरियों को नया स्वरूप दिया। उन्होंने केदारनाथ, रामेश्वरम, सोमनाथ, मुण्डीर आदि मंदिर भी बनवाए, जो हमारी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर हैं।

राजा भोज ने शिव मन्दिरों के साथ ही सरस्वती मन्दिरों का भी निर्माण किया। राजा भोज ने धार, मांडव तथा उज्जैन में 'सरस्वतीकण्ठभरण' नामक भवन बनवाए थे जिसमें धार में 'सरस्वती मंदिर' सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। एक अंग्रेज अधिकारी सीई लुआर्ड ने 1908 के गजट में धार के सरस्वती मंदिर का नाम 'भोजशाला' लिखा था। पहले इस मंदिर में मां वाग्देवी की मूर्ति होती थी। मुगलकाल में मंदिर परिसर में मस्जिद बना देने के कारण यह मूर्ति अब ब्रिटेन के म्यूजियम में रखी है।

महाराजा भोज से सम्बन्धित 1010 से 1055 ई. तक के कई ताम्रपत्र, शिलालेख और मूर्तिलेख प्राप्त होते हैं। भोज के साम्राज्य के अंतर्गत मालवा, कोंकण, खानदेश, भिलसा, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चित्तौड़ एवं गोदावरी घाटी का कुछ भाग शामिल था। उन्होंने उज्जैन की जगह अपनी नई राजधानी धार को बनाया। राजा भोज को उनके कार्यों के कारण उन्हें 'नवसाहसाक' अर्थात् 'नव विक्रमादित्य' भी कहा जाता था। महाराजा भोज इतिहास प्रसिद्ध मुंजराज के भतीजे व सिंधुराज के पुत्र थे। उनकी पत्नी का नाम लीलावती था।

राजा भोज स्वयं एक विद्वान होने के साथ-साथ काव्यशास्त्र, वास्तुशास्त्र एवं व्याकरण के बड़े जानकार थे और उन्होंने बहुत सारे ग्रंथो की रचना किया । मान्यता अनुसार भोज ने 64 प्रकार की सिद्धियां प्राप्त की थीं तथा उन्होंने सभी विषयों पर 84 ग्रन्थ लिखे जिसमें धर्म, ज्योतिष, आयुर्वेद, व्याकरण, वास्तुशिल्प, विज्ञान, कला, नाट्यशास्त्र, संगीत, योगशास्त्र, दर्शन, राजनीतिशास्त्र आदि प्रमुख हैं। इनकी प्रमुख रचनायें निम्नलिखित हैं –

1. समरांगण सूत्रधार
2. सरस्वतीकंठाभरण
3. सिद्वांतसंग्रह
4. राजकार्तड
5. योगसूत्रवृत्ति
6. विद्या विनोद
7. युक्ति कल्पतरु
8. चारु चर्चा
9. आदित्य प्रताप सिद्धान्त

10. आयुर्वेद सर्वस्व श्रृंगार प्रकाश
11. प्राकृत व्याकरण
12. कूर्मशतक
13. श्रृंगारमंजरी
14. भोजचम्पू
15. कृत्यकल्पतरु
16. तत्वप्रकाश
17. शब्दानुशासन आदि ग्रन्थों की रचना की।

'भोज प्रबंधनम्' नाम से उनकी आत्मकथा है। हनुमानजी द्वारा रचित रामकथा के शिलालेख समुद्र से निकलवाकर धारा नगरी में उनकी पुनर्रचना करवाई, जो हनुमन्नाटक के रूप में विश्वविख्यात है। तत्पश्चात उन्होंने चम्पू रामायण की रचना की, जो अपने गद्यकाव्य के लिए विख्यात है। विद्वानों की परम्परा के विषय में इनका योगदान इसी श्लोक से सिद्ध है कि -

अद्य धारा सदाधारा सदालम्बा सरस्वती ।
पण्डिता मण्डिता सर्वे भोजराजे भुवि स्थिते ।।

आईन-ए-अकबरी में प्राप्त उल्लेखों के अनुसार भोज की राजसभा में 500 विद्वान थे। इन विद्वानों में नौ (नौरत्न) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। महाराजा भोज ने अपने ग्रन्थों में विमान बनाने की विधि का विस्तृत वर्णन किया है। इसी तरह उन्होंने नाव व बड़े जहाज बनाने की विधि का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने रोबोट तकनीक पर भी काम किया था।

मालवा के इस चक्रवर्ती, प्रतापी, काव्य और वास्तुशास्त्र में निपुण और विद्वान राजा, राजा भोज के जीवन और कार्यों पर विश्व की अनेक विश्वविद्यालयो में शोध कार्य हो रहा है। इसके अलवा गौतमी पुत्र शतकर्णी, यशवर्धन, नागभट्ट और बप्पा रावल, मिहिर भोज, देवपाल, अमोघवर्ष, इंद्र द्वितीय, चोल राजा, राजेंद्र चोल, पृथ्वीराज चौहान, विक्रमादित्य, हरिहर राय और बुक्का राय, राणा सांगा, अकबर, श्रीकृष्णदेववर्मन, महाराणा प्रताप, गुरुगोविन्द सिंह, शिवाजी महाराज, पेशवा बाजीराव और बालाजी बाजीराव, महाराजा रणजीत सिंह आदि के शासन में भी जनता खुशहाल और निर्भिक रही। भोजराज ने ना केवल अपने राज्य में अपितु सम्पूर्ण भारत में वापी, कूप, तालाब इत्यादि का निर्माण करवाया था। इन्होंने ज्योतिष और वास्तुविद्या के संरक्षण में भी महान कार्य किया और राजमार्तण्ड, समराङ्गणसुत्रधार, युक्तिकल्पतरु नामक ज्योतिष वास्तु के ग्रन्थों की रचना की, इसके अतिरिक्त जिनमें भोजराज ने नीति-धर्मशास्त्र-व्याकरण-चिकित्सा-काव्य-कोष इत्यादि विषयों पर अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया। अपने शासन काल के अंतिम वर्षों में भोज परमार को पराजय का अपयश भोगना पड़ा। गुजरात के चालुक्य राजा तथा चेदि नरेश की संयुक्त सेनाओं ने लगभग 1060 ई. में भोज परमार को पराजित कर दिया। इसके बाद ही उसकी मृत्यु हो गई।

सूत्रधारमण्डन

आचार्य मण्डन का नाम परवर्ती आचार्यों में सर्वोपरि है। महाराणा कुम्भा के प्रसिद्ध दरबारी विद्वानमण्डन अथवा सूत्रधारमण्डन गुजरात के खेता ब्राह्मण के पुत्र थे। विश्व प्रसिद्ध कुम्भलगढ़ दुर्ग के शिल्पी मण्डन ही थे। सूत्रधारमण्डन अपने समय में भारत के सर्वश्रेष्ठ शिल्पशास्त्र के आचार्यों में से एक थे। यह शुभाशुभ काल को देखकर कोई भी निर्णय करते थे। इनके दो पुत्र थे गोविन्द और ईश्वर। महाराणा कुंभा के आश्रित कवि मण्डन के लिखे ग्रन्थों के अनुसार महाराणा कुम्भा रत्नों से जड़े सुंदर सिंहासन पर विराजमान होते थे। इन्होंने वास्तुशास्त्र के प्रत्येक क्षेत्र पर अपनी शोध की दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है तथा ग्रन्थों का लेखन कर आगामी पीढ़ी के लिये एक सीढ़ी का काम किया है। आधारयुक्त इनके विषय में प्राप्त होता है कि इनका जन्म गुजरात के सोमपुरा शिल्पज्ञ कुल में हुआ था। इनके गोत्र के विषय में कहा जाता है कि इनका गोत्र भारद्वाज था। महाराणा कुम्भा का राज्यकाल विक्रम सम्वत 1490-1525 तदनुसार 1433-1468 ई. माना जाता है। इनका सबसे उत्तम कार्य यह रहा कि इन्होंने अपने लिखित ग्रन्थों में अपने नाम को मण्डन शब्द से सम्बोधित किया है, जिससे इनके द्वारा रचित ग्रन्थों की पहचान करना सरल रहा।

सूत्रधारमण्डन के वंशानुक्रम के विषय राजवल्लभ में प्राप्त वर्णन के अनुसार यह दो भाई थे। इनके पिता का नाम क्षेत्रार्क था। गोविन्द और ईश्वर नाम से इनके दो पुत्र हुए इस प्रकार इनका वंश आगे बढ़ा। सूत्रधार मण्डन केवल सूत्रधार ही नहीं अपितु शास्त्रज्ञ और शास्त्र प्रणेता भी थे। इनके पूर्व प्रचलित शिल्प शास्त्रीय मान्यताओं का पर्याप्त अध्ययन इन्होंने किया था, और संस्कृत भाषा का भी अच्छा अभ्यास किया था उनकी कृतियों में मत्स्य पुराण से लेकर अपराजित पृच्छा और हेमाद्री तथा गोपाल भट्ट के संकलनों का भी प्रभाव है। इस प्रकार शास्त्र और लोक में शिल्प और वास्तु के सम्बन्ध में जो स्वस्थ्य और उपयोगी मान्यताएं तथा परंपराएं थी उन सब का सम्यक् अध्ययन करके तथा उनके प्रति उचित दृष्टिकोण अपनाकर अपने व्यक्तिगत प्रयोगात्मक अनुभूतियों का आधार लेकर वास्तु और शिल्प के उन्होंने अनेक ग्रन्थ रचे। काशी के कविंद्र आचार्य 17वीं शताब्दी में हुये इनकी सूची में मण्डन के ग्रन्थों की नामावली मिलती है। इसमें सूत्रधार मण्डन के ग्रन्थ राजबल्लभ, वास्तु मण्डन, प्रसादमण्डन, रूपमण्डन, शिल्प और वास्तुशास्त्र शिल्पाचार्य की सूची 1921 में प्रकाशित हुई थी। जिसमें इनके विरचित ग्रन्थ निम्नलिखित हैं या सूत्रधारमण्डन विरचित ग्रन्थों की सूची इस प्रकार है।

1. देवतामूर्तिप्रकरणम्।
2. प्रासादमण्डन।
3. वास्तुमण्डन।
4. आपतत्व।
5. वास्तुमंजरी।
6. वास्तुसार।
7. वास्तुशास्त्र।
8. राजवाल्लभवास्तुशास्त्रम्।

आचार्य भुवनदेव

आचार्य भुवनदेव मेवाड़ के थे और इन्होंने लगभग बारहवीं शताब्दी तक अपनी कालजयी रचना अपराजितपृच्छा का सम्पादन किया था। अपराजित पृच्छा मात्र वास्तु-स्थापत्य पर आधारित नहीं है, अपितु इसमें ज्योतिष-वास्तु-गणितचित्र-मापन पद्धति-प्रतिमा-आयुध इत्यादि शस्त्रों की भी चर्चा की गई है। 12 वीं शताब्दी में प्रचलित सामाजिक परम्पराओं, आवश्यकताओं, शासकीय संकल्पों इत्यादि विविध विषयों का विस्तार पूर्वक वर्णन प्राप्त होता है। इस ग्रन्थ पर भोजराज कृत समराङ्गण सूत्रधार का प्रभाव दिखाई देता है। इस प्रकार से वास्तुशास्त्र के प्रवर्तकों तथा प्रमुख परवर्ती आचार्यों की चर्चा प्राप्त होती है। भुवनदेव कृत मन्दिर स्थापत्य और मूर्तिकला के मूलभूत ग्रन्थ अपराजितपृच्छा का सर्वाधिक महत्त्व वास्तु शास्त्र के अध्येताओ में दिखता है । आचार्य भुवनदेव शिवलिंग और मन्दिर स्थापत्य पर वास्तु समुच्चय शैवागम सम्मत ग्रन्थों का भी प्रणयन किया जो लुप्त हो चुके हैं ।

टोडर मल्ल

सर्व विदित है कि किसी भी प्रसिद्ध व्यक्ति के साथ अनेक प्रकार के स्थान या वंश जुड़ जाते हैं इतिहासकारों के साक्ष्यो से अंतिम निर्णय यही है कि टोडर मल्ल का जन्म टंडन वंश में हुआ था इसी टंडन वंश को बाला परिवार भही कहा गया है। यह परिवार चार स्थानों पर विशेष रूप से निवसित था – पंजाब, संयुक्त प्रान्त, अवध एवं आगरा। ये अकबर के दरबार में प्रधानमंत्री के रूप में भी कार्य किये इनका प्रधानमंत्री के रूप में कार्य करना अलभ्य अनेक पांडुलिपियों का इनके नाम से प्रकाशन से स्पष्ट होता है कि इनका जीवन कितना बौद्धिक एवं राजनैतिक दृष्टि से प्रतिष्ठापरक रहा होगा टोडर द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतो का प्रयोग आज भी भारत सरकार के राजस्व विभाग में किया जाता है अकबर की सेना में आने से पहले ये शेरशाह सूरी के राज्य कर्मचारी रहे थे, कुशाग्र बुद्धि के कारण ही सभी कर्मचारियों के बीच इनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, बाद में अकबर के शासन काल में क्रमशः सैनिक, सहायक दीवान, भूमि एवं उपमंत्री पद पर कार्य करने के अनंतर 1582 से 1589 तक प्रधानमंत्री के रूप में कार्य करते हुए 1589 के अंत में स्वर्गवासी हो गए।

इन्होने अकबर के दरबार में अपने 30 वर्षो के सेवाकाल में काशी के विश्वप्रसिद्ध विश्वनाथ मंदिर के निर्माण से लेकर नष्टप्राय अनेक शास्त्रीय ग्रंथो का संपादन कराकर शास्त्रों के प्रति अपना समर्पण भाव दिखाया था । इनको केन्द्रित कर अनेक आचार्यो ने टोडर जातक आदि ग्रंथो का निर्माण भी किया है इसी से इनकी विद्वत्ता और प्रमाणिकता का पता लगता है।

राम दैवज्ञ

विदर्भ देश के में धर्मपुर नामक ग्राम के ये निवासी थे, इनकी शिक्षा दीक्षा काशी से हुई, इनके पितामह चिंतामणि हुए ये अत्यंत तीक्ष्ण बुद्धि के व्याकरण के परम विद्वान थे। इनके पिता का नाम अनन्त दैवज्ञ था। जैसा कि मुहूर्त चिंतामणि में इन्होंने अपने वंश का वर्णन किया है कि इनके बड़े भाई का नाम श्री नीलकंठ दैवज्ञ था। शाके 1522 में इन्होंने काशी में मुहुर्त चिंतामणि की रचना की। ये ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र के उद्भट विद्वान थे।

तिरुमंगलत नीलकण्ठ मूसत

तिरुमंगलत नीलकण्ठ मूसत दक्षिण भारत के द्रविड़ परंपरा के आचार्य रहे हैं । इनका स्थान राजराजमंगल धाम नामक मंदिर के पास बताया गया है, जो वर्तमान में केरल प्रदेश के

मल्लपुरम जिले के तिरूर के पास अवस्थित है। तिरूर क्षेत्र में विद्यमान प्रकाश अथवा वेट्टम विषय से सम्बन्धित है विषय का अर्थ मलयालम में नाटो और अन्यत्र नाडु भी कहा गया है इनके गुरु का नाम सदाशिव है। इनकी एक रचना मनुष्यालय चंद्रिका प्राप्त होती है, जिसमें उन्होंने अपने पूर्ववर्ती ग्रन्थों का वर्णन किया है जिसमें मयमतम युग्म अर्थात् मयमत और मयदीपिका, प्रयोगमंजरी, निबन्ध, भागवत भास्करीयम, मनुमत, इशानशिवगुरुदेव पद्धति तथा श्रीहरियजन आदि महागम ग्रन्थ हैं।

आचार्य जीवनाथ

आचार्य जीवनाथ ज्योतिष शास्त्र एवं वास्तु शास्त्र के उद्भट आचार्य थे। यह मैथिल ब्राह्मण वंश के आचार्य हैं। इनका उस वंश से संबद्ध है जिसने वेद वेदांग से लेकर ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र का विशेष अध्ययन अध्यापन किया था। आचार्य का वंश अनेक शासकों के द्वारा सम्मानित हुआ था। वास्तु शास्त्र पर आचार्य जीवनाथ के द्वारा वास्तु रत्नावली नामक प्रमुख ग्रन्थ लिखा गया जोकि वर्तमान समय में वास्तुशास्त्र के अध्येताओं के लिए परम उपयोगी सिद्ध हो रहा है। इस प्रकार वास्तुशास्त्र के लिए इनकी परम्परा अत्यन्त प्रमाणिक रही है। वैसे तो जीवनाथ जी के द्वारा अन्य ग्रन्थ भी प्रणीत हैं परन्तु प्रमाणिक जानकारी के अभाव में उनका वर्णन यहां नहीं दिया जा रहा है।

सूत्रधार गोविन्द

आचार्य सूत्रधार गोविन्द वास्तु शास्त्र के परम आचार्य हैं। सूत्रधारमण्डन के वंश से इनका सम्बन्ध है। सूत्रधार गोविन्द मेद पाटेश्वर महाराणा रायमल के आश्रित आचार्य थे। ये वास्तु शास्त्र के देवालय विधान मंदिर प्रतिष्ठान तथा शिखर विधान के विशेषज्ञ के रूप में जाने जाते हैं। भारतीय वास्तु शास्त्र में नागर, वेसर तथा द्रविड़ जैसे प्रासादो के शिखर विधान के सम्बन्ध में मध्यकाल तक जो तकनीक प्रचलित थी उसमें सूत्रधार गोविन्द ने अनेक विशेषताओं का प्रयोग करते हुए तत्कालीन मन्दिरों पर प्रयोग किया, जोकि वास्तु शास्त्र में एक नवोन्मेष के रूप में वर्तमान में जाना जाता है। इस प्रकार आचार्य का योगदान वास्तुशास्त्र के अध्येताओं के लिए महानीय है। एवं वास्तु शिखर निर्माण में कला एवं रेखादी जैसे दुरूह विषयों को इन्होंने प्रयोगात्मक रूप से प्रस्तुत कर सरल मार्ग प्रशस्त किया।

आचार्य वासुदेव द्विज

इनके द्वारा वास्तुशास्त्र पर अद्वितीय ग्रन्थ वास्तु प्रदीप की रचना की गई है। इनकी विद्वत्ता संवत्सर विद्वानों के साथ साहचर्य से कथित एवं वास्तु विद्या विशारदो से आनंद पूर्वक इनके विषय में विस्तृत ज्ञातव्य है। वास्तुशास्त्रीय मुनियों के मत से जो व्यवहार वास्तुशास्त्र में प्रायोगिक रूप से प्रस्तुत करने वाले परम आचार्य वासुदेव द्विज वास्तुशास्त्र के आचार्य में श्रेष्ठ स्थान रखते हैं। इन्होंने सर्वप्रथम 16 प्रकार के गृहों का प्रथमत: वर्णन करते हुए उनके तत्वों का बोध वास्तु शास्त्र के अध्येताओ हेतु प्रस्तुत किया।

आचार्य मानसार

आचार्य मानसार की विश्वविख्यात कृति मानसार प्राप्त होती है परन्तु इनका जीवन परिचय प्राप्य नही है। इनके अनुसार वास्तुशास्त्र के प्रवर्तक आचार्यों की संख्या 32 है।

वर्तमान या आधुनिक विद्वान

वर्तमान समय में भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, विद्यालयों में वास्तु शास्त्र से सम्बन्धित अध्ययन अध्यापन करवाया जा रहा है। जैसे राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली, लाल बहादुर नेशनल संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली, तिरुपति नेशनल संस्कृत विश्वविद्यालय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, नागपुर, सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात, कामेश्वर सिंह दरभंगा विश्वविद्यालय, महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय उज्जैन इत्यादि। इसके अतिरिक्त साधारण विश्वविद्यालयों में भी वास्तुशास्त्र एवं ज्योतिष के विभिन्न पाठ्यक्रम के करवाए जाने लगे हैं।

सम्पूर्ण विश्व में अपनी पहचान बना चुकी इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय भी अब शास्त्रों का सुलभता से सबको ज्ञान देने के हेतु से इस ओर अग्रसर हो रही है, यह गौरव का विषय है। उपर्युक्त संस्थओं के अतिरिक्त सम्पूर्ण भारत और विश्व में कई आचार्य वास्तुशास्त्र के संरक्षण और संवर्धन के लिए अपना जीवन समर्पित कर चुके हैं और कर भी रहे हैं।

अभ्यास प्रश्न – 1

निम्नलिखित में से सही विकल्प का चुनाव कीजिये

1. विश्वकर्मा किस परम्परा के प्रवर्तक आचार्य हैं -

   अ. वेशी

   ब. द्राविड

   स. नागर परंपरा

   द. कोई नही

2. दानव शिल्पि कौन थे ?

   अ. आचार्य मय

   ब. आचार्य वृहस्पति

   स. आचार्य विश्वकर्मा

   द. कोई नहीं

3. रामायण के अनुसार आचार्य मय किसके पुत्र हैं –

   अ. दिति

   ब. मन्दोदरी

   स. शूर्पणखा

   द. सीता

4. सूत्रधार मण्डन किसके दरबारी विद्वान थे –

   अ. अकबर

   ब. महाराणा कुंभा

   स. विक्रमादित्य

   द. महाराणा प्रताप

अभ्यास प्रश्न – 2

निम्नलिखित में से सत्य असत्य का निर्धारण कीजिये

1. आचार्य वराह मिहिर के पिता का नाम आदित्य दास था। ( )
2. राजा भोज वास्तुशास्त्र के साथ-साथ अन्य विषयों के विद्वान नही थे। ( )
3. सूत्रधार मण्डन गुजरात के निवासी थे। ( )
4. वाराहमिहिर विक्रमादित्य के नवरत्नों मे नही थे। ( )

अभ्यास प्रश्न – 3

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये –

1. विश्वकर्मा देव शिल्पी तो आचार्य मय .... हैं।
2. पांडवों की सभा में सभा भवन का निर्माण ....किया था
3. टोडरमल ने अकबर के दरबार में ...... वर्षों तक सेवा कार्य किया
4. रामदैवज्ञ की रचना........................... है।

2.4 सारांश

पिछली इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जाना कि वास्तुशास्त्र का उद्भव जिन प्रवर्तक आचार्यों से हुआ उसके बाद यह परम्परा हम तक कैसे प्राप्त हुयी। तथा इस शास्त्र की आचार्य परम्परा कौन सी है? इस शास्त्र के प्रवर्तक तथा आचार्यों का वर्णन भी आपने पढ़ा। ज्योतिषवेदांग के संहिता स्कन्ध से वास्तु का सम्बन्धहै तथा अष्टाङ्गवास्तु में वास्तु के आठ अङ्गों में ज्योतिष को भी एक अङ्ग माना गया। इसलिए वास्तु' के प्रवर्तक आचार्य और ज्योतिष के प्रवर्तक आचार्यों में कहीं-कहीं साम्यता भी दृष्टिगोचर होती है। मत्स्यपुराण में वास्तु के अष्टादश, अग्निपुराण में पच्चीस और मानसार में बत्तीस आचार्यों का उल्लेख प्राप्त होता है। वास्तुशास्त्र दो परम्पराओं के रूप में विकसित हुआ। एक विश्वकर्मा परम्परा और दसरी मय परम्परा विश्वकर्मा नागर परम्परा के तथा मय द्राविड परम्परा के जनक कहलाए। इन दोनों परम्पराओं में वास्तुशास्त्र के अनेक ग्रन्थों की रचना हुई।

इन ग्रन्थों में वर्णित सिद्धान्तों का अनुपालन अद्यावधि भव्य भवनों के निर्माण में किया जाता है। इन सभी आचार्यों में आचार्य विश्वकर्मा और मय आचार्य के रूप में स्थान प्राप्त किया है। इन दोनों ने वास्तुशास्त्रके प्रमुख आचार्यों की अपनी-अपनी परम्पराओं का विकास समय के साथ-साथ होता गया। विश्वकर्मा देवशिल्पि और मयाचार्य दानवशिल्पि के रूप में विख्यात हुए। विश्वकर्मा नागर परम्परा के प्रवर्तकाचार्य थे। इन्होने ही ब्रह्मा के सृष्टिकार्य में उनका सहयोग किया। इस प्रकार हम देख पा रहे हैं कि भारतीय संस्कृति साहित्य एवं सभी प्रकार के ज्ञान राशि का स्रोत वैदिक वांग्मय ही है। वास्तु शास्त्र के आचार्यों का महत्व न केवल पौराणिक काल से अभी तक अपितु वैदिक काल से भी दृष्टिगोचर होता है। वैदिक काल से लेकर यज्ञ वास्तु के निर्माण के सिद्धान्तों के साथ ही गृह वास्तु की आवास का महत्व प्रतिपादित होता रहा है, जिसका उन्नत रूप अन्य ग्रन्थों में दृष्टिगोचर होता है। आचार्यों ने आवास प्राणी मात्र के लिए आवश्यक माना है चाहे वह बुद्धि युक्त मनुष्य मनुष्य प्राणी कोई भी प्राणी चाहे वह स्वयं का आवास बनाने में सक्षम हो अथवा अक्षम, आवास की खोज में रहता है। इन विषयों पर वास्तु शास्त्र की विभिन्न अवधारणाएं चित्रकला, मूर्तिकला, शिल्पकला, प्रासाद इत्यादि के विषयों

को विस्तार से चर्चा किया है।

2.5 शब्दावली

सृष्टिकार्य – सृष्टि निर्माण कार्य

देवशिल्पि – देवताओं के शिल्पि

दानवशिल्पि – राक्षसों के शिल्पि

विदर्भ देश – वर्तमान समय में महाराष्ट्र प्रदेश का हिस्सा

ग्रन्थरत्न – श्रेष्ठ ग्रन्थ

2.6 अभ्यास प्रश्न की उत्तरमाला

अभ्यास प्रश्न – 1

1. स. नागर परंपरा
2. अ. आचार्य मय
3. अ. दिति
4. अ. अकबर

अभ्यास प्रश्न – 2

1. सत्य
2. असत्य
3. सत्य
4. असत्य

अभ्यास प्रश्न – 3

1. दानव शिल्पी
2. आचार्य मय
3. 30 वर्ष
4. मुहूर्त चिंतामणि

2.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. मयमतम्
2. वास्तु सौख्यम्
3. वास्तु सार
4. विश्वकर्माप्रकाश
5. बृहत्संहिता
6. वास्तुप्रदीप
7. समराङ्गण सूत्रधार
8. मनुष्यालयचन्द्रिका
9. शिल्प रत्न।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY